कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

15-04-24

डॉ० अनुरुद्ध सिंह

हिन्दी विभागाध्यक्ष

मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

अमित कुमार सिंह

अमित कुमार सिंह

पैट क्रमांक- 22090028

पंजीकरण संख्या– 21909679

“कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन”

प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल से पूर्व निबन्ध का कोई अस्तित्व ठीक-ठीक नहीं मिलता है। इसका एक कारण इसके पहले गद्य का ठीक ढंग से प्रचलन न होना भी हो सकता है। आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों की ओर ध्यान दें तो इनके आलोक में निबन्ध वह है जिसमें व्यक्तित्व या व्यक्तिगत विशषेता उपलब्ध हो। निबन्ध का आरम्भिक दौर भारतेन्दु से शुरू होता है। भारतेन्दु युग से ही निबन्धों की परम्परा हिन्दी साहित्य में सही रूप से आरम्भ होती है।

कृष्ण बिहारी मिश्र हिंदी साहित्य के एक प्रख्यात लेखक, निबंधकार, आलोचक और विद्वान थे। वे 'आधुनिक हिंदी निबंध' के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले लेखकों में से एक थे। उनके निबंधों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विषयों की गहन समझ और विश्लेषण मिलता है। कृष्ण बिहारी मिश्र के लेखन में भारतवर्ष की मंगल कामना और नैतिक बोध प्रकट होता है। साहित्य का सबंधं उसके समाज से गहरा होता है। इसीलिए साहित्य की व्याख्या, साहित्य की रचना उसके सामाजिक सदंर्भों को केंद्र में रखकर ही की जाती रही है। कहा जा सकता है कि किसी भी साहित्य को सामाजिक सन्दर्भ में ही सही व्याख्या सम्भव हो सकती है। सामाजिक यथार्थ से जुड़ कर ही किसी भी कृति का महत्त्व बना रह सकता है। कृष्ण बिहारी मिश्र के निबन्ध स्वयं में कई सामाजिक सदंर्भों को समेटे हुए हैं।

हमारे समाज का गाँव, नगर, वहां बसे मनुष्य, वहां की परम्परा और लोक जीवन मिश्र जी के निबन्धों में दृश्यमान हो उठते हैं। तेजी से धूमिल होती जा रही मानवता और मानवीय मूल्यों पर मिश्र जी

Anuddh

की रचनाएँ कुशलता से प्रहार करती है। कृष्ण बिहारी मिश्र के लेखन में भारतवर्ष की मंगल कामना और नैतिक बोध प्रकट होता है। उनके निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन का विवेचन उनके दर्शन, अनुभव, और संवेदनशीलता के माध्यम से होता है। उनके निबंधों के महत्व को रेखांकित करना, खासकर भारतीय संस्कृति और लोक जीवन को समझने में उनकी भूमिका को उजागर करना है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के चिंतक के रूप में कृष्ण बिहारी मिश्र एक लोक चेतस मनीषी के रूप में दिखाई देते हैं। मिश्र जी ने साहित्य योगी की तरह समाधी भाव में लीन होकर अपनी रचनाएँ की है। यह शोध प्रबंध कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में दर्शाए गए भारतीय संस्कृति और लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहन और विस्तृत विश्लेषण करेगा।

बेहया का जंगल, मकान उठ रहे हैं, आंगन की तलाश, अराजक उल्लास, गौरैया ससुराल गई जैसे ललित निबंध-संग्रह और आस्था और मूल्यों का संक्रमण, आलोक पंथा, परंपरा का पुरुषार्थ, माटी महिमा का सनातन राग, नमेधया, भारत की जातीय पहचान, सनातन मूल्य जैसे वैचारिक निबंध-संग्रह प्रांजल, प्रवाह पूर्ण और लोक-जीवन से सुवासित रचनाएं हैं। ये रचनाएं हिंदी गद्य की एक अलग छटा बिखेरती हैं, जिनमें लोकानुभव और समय संवेदना दोनों ही मुखरित होती हैं। गांव घर के साथ गहरे जुड़ाव और नए परिवर्तनों की कस-मसाहट और उद्विग्नता के साथ वे अपने निबंधों में एक किस्म के लोक रस का आविष्कार करते रहे। निश्चित रूप से कृष्ण बिहारी मिश्र के लेखन में भारतवर्ष की मंगल कामना और नैतिक बोध प्रकट होता है।

कृष्ण बिहारी मिश्र के निबन्ध उनकी सक्षम मनोवृत्ति एवं बहुमुखी चेतना से सम्पन्न है। वैसे तो चेतना के तीन स्तर माने जाते हैं- चेतन, अवचेतन और अचेतन। चेतन स्तर पर वे तमाम बातें शामिल हो जाती है जिनकी सहायता से हम अपने जीवन में किसी भी बात को सोचते हैं, समझते हैं। किसी भी कार्य को करते हैं, यह स्तर मनुष्य के मन में सबसे अधिक हावी होता है। अवचेतन स्तर में वे तमाम बातें विद्यमान रहती है जिनका ज्ञान हमें तत्क्षण नहीं रहता परंतु यदि हम जोर देकर याद करें तो सारी बातें याद आ जाती है। अवचेतन स्वर में वे बातें आती हैं जिसे हम भूल चुके होते हैं और जो हमारे बहुत याद करने पर भी याद नहीं आती है और विशेष प्रक्रिया से हमें उन बातों का स्मरण करवाया जाता है।

अतः चेतना मनुष्य के मन की वह विशेषता है जो व्यक्ति को उसके आसपास के विषयों से एवं उसके व्यक्तिगत मन के भावों से अवगत करवाती हैं। इसे ही हम विचार शक्ति या बुद्धि कहते है। मिश्र जी अपने निबन्धों में अपने मन की मनोवृति और चेतना का सर्वोत्तम रूप प्रस्तुत करते हैं। उनका मन अपनी संस्कृति, अपनी परम्परा और अपनी धरोहरों से आत्मीयता के साथ जुड़ा हुआ है। वे हर एक बात को बारिकी से समझने के साथ-साथ अपने निबन्धों के माध्यम से अपने पाठकों को भी समझाते हैं।

शोध-विषय की आवश्यकता :

हिंदी साहित्य में शोध की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमारे समाज, संस्कृति, साहित्यिक उत्थान, सामाजिक अध्ययन, भाषा और साहित्य का अध्ययन और साहित्यिक विरासत का संरक्षण करता है। हमारे साहित्यिक धरोहर को संरक्षित रखने में, समाज की समझ में, और साहित्यिक प्रगति में मदद करता है। शोध के माध्यम से हम पुराने और अनजाने लेखकों और कृतियों की खोज कर सकते हैं और उनका अध्ययन कर सकते हैं। कृष्ण बिहारी मिश्र हिंदी निबंध साहित्य के अग्रणी स्तंभों में से एक हैं। उनके निबंधों का अध्ययन करके हम हिंदी निबंध साहित्य के इतिहास और विकास को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। मिश्र जी की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है, उनके निबंधों का अध्ययन करके हम हिंदी भाषा की अभिव्यंजक क्षमता को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। इनके निबंधों में विभिन्न साहित्यिक शैलियों का प्रयोग हुआ है। इन निबंधों का अध्ययन करके हम विभिन्न साहित्यिक शैलियों के बारे में जान सकते हैं। मिश्र जी के निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन का गहन चित्रण है। इन निबंधों का अध्ययन करके हम हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक अध्ययनों को बढ़ावा दे सकते हैं।

मिश्र जी के निबंधों में विभिन्न सामाजिक वर्गों, समुदायों और जातियों के जीवन का चित्रण है। इन निबंधों का अध्ययन करके हम भारतीय समाज के ताने-बाने को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। मिश्र जी के निबंधों में विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच सद्भाव और एकता का संदेश है। इन निबंधों का अध्ययन करके हम राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में योगदान दे सकते है, मिश्र जी के निबंधों में जातिवाद, सामाजिक कुरीतियों और महिलाओं के उत्पीड़न जैसे सामाजिक मुद्दों

पर भी प्रकाश डाला गया है। इन निबंधों का अध्ययन करके हम इन मुद्दों पर जागरूकता बढ़ा सकते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन के शोध विषय की समाज और हिंदी साहित्य के लिए आवश्यकता है क्योंकि इससे हमें हमारे समाज और साहित्य की समझ में मदद मिलती है और हमें उसके महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता है।

शोध-विषय का महत्व :

शोध विषय का महत्व विभिन्न क्षेत्रो में अन्वेषण करने के लिए होता है। यह नए ज्ञान की खोज, समस्याओं का समाधान, सामाजिक अध्ययन आदि के लिए महत्वपूर्ण है। शोध विषय का चयन और अध्ययन अपने विचारो को व्यक्त करने, और समस्यायों को समझने के लिए आत्म अध्ययन का मौका देता है।कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में 'भारतीय संस्कृति और लोक जीवन' शोध विषय का विशेष महत्व है, इनके निबंध हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। सामाजिक चेतना और सुधार का स्रोतहै, मनोरंजन और शिक्षा का साधन है। भाषा कौशल और रचनात्मकता विकसित करने में सहायक है।

इस शोध विषय के माध्यम से हम भारतीय संस्कृति की प्राचीनता, विविधता, और विकास को समझ सकते हैं। यह हमें भारतीय परंपराओं, सम्प्रदायों, और संस्कृति के मूल्यों का अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है। इस शोध विषय के माध्यम से हम भारतीय लोक जीवन के अनेक पहलुओं को समझ सकते हैं। यह हमें गांवों के सांस्कृतिक, लोक कला, परंपरागत उत्सव, और सामाजिक संगठन का अध्ययन करने का मौका देता है।इस शोध विषय के माध्यम से हम उन प्रेरणादायक पहलुओं को समझ सकते हैं जो हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह हमें अपने अनुसंधानों के माध्यम से समाज को स्वयंसेवक और सुधारक के रूप में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। यह शोध विषय हमें भारतीय संस्कृति की साझा समझ में मदद करता है, जो विभिन्न क्षेत्रों, जातियों, और समाजों के बीच एक अद्वितीय और सामंजस्यपूर्ण धारा है।

किसी भी शोध कार्य को करने के पीछे एक निश्चित उद्देश्य को होता है। मुख्यतः अपने साहित्य, संस्कृति, समाज और आने वाली पीढ़ी को अपने शोध-कार्य के माध्यम से लाभान्वित करना किसी भी शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। अपने विषय को केंद्र में रखकर उसमें विभाजित अध्यायों का बारीकी से निरीक्षण और विवेचन करना वहुत ही आवश्यक होता है। यही वह विशेषता है जिसके आधार पर कोई भी शोध कार्य महत्त्वपूर्ण बनता है। मैं कृष्ण बिहारी मिश्र के रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति, लोक जीवन, भारतीय परम्परा, समाज एवं मानवीय मूल्यों का समग्रता से मूल्यांकन करना चाहता हूँ तथा समाज में इनकी प्रासंगिकता एवं महत्त्व को भी दर्शाना चाहता हूँ। प्रत्येक शोध की अपनी एक निश्चित सीमा होती है। सीमा विहिन कार्य भटकाव की ओर ले जाता है और मूल उद्देश्य पीछे छूट जाता है। एक निश्चित सीमा के अंतर्गत ही हमें शोध-कार्य करना होता है। साहित्य की सीमा अपने आप में बहुत विस्तृत होती है। मैं मिश्र जी के समग्र कृतियों को केंद्र में रखकर अपना शोध कार्य पूरा करना चाहूँगा। कहना न होगा कि तटस्थता का निर्वाह एवं सत्य की बेबाक स्वीकृति ही मेरे शोध की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता का आधार होगा।

अपने विषय को केंद्र में रखकर उसमें विभाजित अध्यायों का बारीकी से निरीक्षण और विवेचन करना बहुत ही आवश्यक होता है। यही वह विशेषता है जिसके आधार पर कोई भी शोध कार्य महत्त्वपूर्ण बनता है।मैं कृष्ण बिहारी मिश्र के रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति, लोक जीवन, भारतीय परम्परा, समाज एवं मानवीय मूल्यों का समग्रता से मूल्यांकन करना चाहता हूँ तथा समाज में इनकी प्रासंगिकता एवं महत्त्व को भी दर्शाना चाहता हूँ। किसी भी शोध का शिक्षा, संस्कृति, साहित्य और लोक जीवन के संदर्भ में विशेष महत्त्व होता है। कृष्ण बिहारी मिश्र का रचना संसार विस्तृत ही नहीं बहुमुखी विशेषताओं से सम्पन्न भी है। अतः इनके निबन्धों को केंद्र में रखकर उनमें निहित भारतीय संस्कृति और लोक जीवन को निष्पक्ष रूप से उजागर करने का प्रयास मेरे इस शोध कार्य में किया जाएगा।

Aniruddh

पूर्वकृत शोध कार्य:

कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों पर बहुत कम कार्य हुआ है, उनके निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन विषय पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। अतः यह शोधार्थी द्वारा चयन किया गया नवीन और मौलिक कार्य होगा, जिसके तहत इस में शोध की अपार संभावनाएं और चुनौतियां भी है, जिसे स्वीकार कर के शोधार्थी शोध-कार्य को सफल बनाने का प्रयास करेगा।

- वर्तमान में 'कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में चेतना के विविधआयाम' विषय पर बर्दवान विश्वविद्यालय में शोधार्थी दिव्या प्रकाश के द्वारा शोध कार्य चल रहा है।

इस शोध कार्य के लिए प्रसिद्ध ग्रंथागारों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के ग्रंथागारों, विद्वानों द्वारा आलोचनात्मक एवं संपादित ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं की सहायता भी ली जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर कृष्ण बिहारी मिश्र जी के परिवार के सदस्यों से संपर्क भी किया जाएगा।

शोध-विषय के आधार ग्रन्थ-

1. मिश्र कृष्ण बिहारी, आँगन की तलाश, सत्साहित्य प्रकाशन, 1999
2. मिश्र कृष्ण बिहारी, अराजक उल्लास (प्रथम संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, 2007
3. मिश्र कृष्ण बिहारी, अराजक उल्लास (द्वितीय संस्करण), वाणी प्रकाशन, 2010
4. मिश्र कृष्ण बिहारी, न मेधया, भारतीय ज्ञानपीठ, 2010
5. मिश्र कृष्ण बिहारी, रामकृष्ण परमहंस: कल्पतरु की उत्सव लीला, ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2011
6. मिश्र कृष्ण बिहारी, परंपरा का पुरुषार्थ, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2015
7. मिश्र कृष्ण बिहारी, आलोक पंथा, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2017
8. मिश्र कृष्ण बिहारी, बेहया का जंगल, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2021

Aniruddha

शोध-परिकल्पना:

कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों पर शोध कार्य हुए है परन्तु भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। उनके निबंधों में भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है, जैसे कि- सामाजिक रीति-रिवाज, त्यौहार, परंपराएँ, लोक-कला, लोक-गीत, परिवारवाद, सामाजिक सद्भाव, प्रकृति प्रेम एवं आध्यात्मिकता। उनके निबंध पाठकों को भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन के प्रति जागरूक करते हैं और उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ने में मदद करते हैं।

शोध-प्रविधि:

कृष्ण बिहारी मिस्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन विषय पर शोध करने के लिए निम्नलिखित शोध पद्धति का उपयोग किया जायेगा-

हमारा शोध विषय हिंदी साहित्य के आधुनिक काल से है और निबंध से है। इसलिए इसमें प्रमुख रूप से विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। इसके अतिरिक्त यथास्थान व्याख्यात्मक, समाजशास्त्रीय, समीक्षात्मक, गवेषणात्मक, तुलनात्मकऔर निर्णयात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

Anuradha

शोध अध्यायों का विभाजन :

मेरा शोध विषय 'कृष्ण बिहारी मिश्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन' जिस पर मैंने संभावित 7 अध्याय मुख्य रूप से निर्धारित किया है तथा शोध कार्य के दौरान सारगर्भित अध्ययन करते हुए उप-अध्यायों का वर्गीकरण करने का प्रयास करूँगा।

अध्याय 1 :	हिन्दी निबन्ध परम्परा स्वरूप और विकास
अध्याय 2 :	कृष्णबिहारीमिश्रकेनिबंधोंमेंसामाजिक संवेदना
अध्याय 3 :	कृष्ण विहारी मिश्र के निबंधोंमेंभारतीय संस्कृति
अध्याय 4 :	कृष्ण बिहारी मिश्रके निबंधोंमेंलोक जीवन
अध्याय 5 :	वर्तमान समय में परिवर्तित होती चेतना एवं कृष्ण बिहारी मिश्र के निबन्ध
अध्याय 6:	कृष्णबिहारी मिश्र के निबन्ध की भाषिक संरचनाएवं विश्लेषण

उपसंहार

परिशिष्ट:

सन्दर्भ ग्रन्थ :

सहायक ग्रंथों की सूची :

1. डॉ. कमल एवं दिव्या प्रकाश,सांस्कृतिक चेतना के विरल साधक : कृष्ण बिहारी मिश्र नवीन प्रकाशन,कोलकाता, 2023
2. चौबे कृपाशंकर, विरल सारस्वत साधनाइंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, 2018
3. सिंह विजय बहादुर व शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी गांव की कलम, सम्मान समिति, कोलकाता, 2015
4. कृष्ण बिहारी मिश्र पर आलोचनात्मक लेख व शोध-पत्र
5. हिंदी साहित्य के इतिहास- इसमें आधुनिक हिंदी साहित्य एवं निबंध लेखन के विकास पर केंद्रित पुस्तकें।

शोध निर्देशक
Anuraddh 15-04-24

डॉ० अनुरुद्ध सिंह
हिंदी, विभागाध्यक्ष
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी
अमित कुमार सिंह

अमित कुमार सिंह
अनुक्रमांक : 21909679
पंजीकरण संख्या : 22090028